

भारतीय इतिहास में छत्रपति शिवाजी महाराज का योगदान

डॉ नीलम सोनी

असिस्टेंट प्रोफेसर -इतिहास

रामसहाय राजकीय महाविद्यालय बैरी शिवराजपुर कानपुर नगर

सारांश

मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680 ई.) ने सत्रहवीं शताब्दी के भारत के सामाजिक-राजनीतिक, सैन्य और प्रशासनिक परिदृश्य को मौलिक रूप से नया आकार दिया। जबकि पारंपरिक इतिहासलेखन अक्सर एक महान सैन्य नेता के रूप में उनके काल्पनिक आख्यान पर ध्यान केंद्रित करता है, समकालीन अकादमिक रूपरेखाएँ एक एकीकृत विश्लेषण की मांग करती हैं जो उनके संस्थागत नवाचारों, रणनीतिक पद्धतियों और स्थायी राज्य-निर्माण मॉडल का मूल्यांकन करे। यह लेख शिवाजी महाराज के भारतीय इतिहास में योगदान का एक व्यापक संश्लेषण प्रदान करता है, जिसमें उनके शुरुआती परिचालन वातावरण, रणनीतिक सिद्धांतों, प्रशासनिक सुधारों, नौसेना शक्ति और धार्मिक नीति का परीक्षण किया गया है। इसके अलावा, यह अध्ययन ऐतिहासिक पद्धति को आधुनिक तकनीकी प्रगति, जैसे कि भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS), LiDAR स्कैनिंग, और 3D डिजिटल संरक्षण के साथ जोड़ता है, जो वर्तमान में मराठा सैन्य वास्तुकला और पहाड़ी किलों के नेटवर्क की हमारी समझ को बदल रहे हैं। हम मराठा प्रशासनिक व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास ("लक्षण सुधार") का भी विश्लेषण करते हैं—जो सामंती वतनदारी संरचनाओं से एक केंद्रीकृत, योग्यता-आधारित राज्य (स्वराज्य) की ओर स्थानांतरित हुआ—और सार्वजनिक इतिहास में उभरती चुनौतियों का गंभीर रूप से मूल्यांकन करते हैं, जिसमें विरासत संरक्षण के जोखिम, राजनीतिक उपकरणों और इतिहासलेखन संबंधी विवाद शामिल हैं। प्राथमिक संग्रहणीय रिकॉर्ड (जैसेसभासद बखड़) और समकालीन यूरोपीय फैक्टरी रिपोर्टों को पुरातात्विक एवं संरक्षण सर्वेक्षणों के आधुनिक अनुभवजन्य डेटा के साथ एकीकृत करके, यह शोधपत्र प्रदर्शित करता है कि कैसे शिवाजी महाराज की संस्थागत वास्तुकला ने क्षेत्रीय स्व-शासन और नौसैनिक रक्षा के लिए एक लचीला ढांचा स्थापित किया। यह निष्कर्ष भौतिक मराठा विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ उनकी रणनीतिक विरासत का निष्पक्ष ऐतिहासिक मूल्यांकन प्रदान करने के लिए बहुविषयक अनुसंधान पद्धतियों को लागू करने की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्द : छत्रपति शिवाजी महाराज, मराठा साम्राज्य, स्वराज्य, किला वास्तुकला, गनिमी कावा, विरासत संरक्षण

1. प्रस्तावना

1.1 ऐतिहासिक संदर्भ और स्वराज्य का उदय

सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में, भारत का दक्कन प्रायदीप तीन शक्तिशाली इस्लामी सल्तनतों—बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा—के साथ-साथ शाहजहाँ और बाद में औरंगजेब के अधीन मुगल साम्राज्य की विस्तारवादी शक्ति के प्रभुत्व में था। क्षेत्रीय सामाजिक-राजनीतिक संरचना गहराई से सामंती थी, जिसे वतनदारी प्रणाली के तहत भूमि का स्वामित्व रखने वाले स्थानीय कुलीन वर्गों द्वारा संचालित किया जाता था जिन्हें देशमुख और देश पांडे कहा जाता था। ये वर्ग भू-राजस्व को नियंत्रित करते थे और निजी सेनाएँ रखते थे। इस व्यवस्था के कारण व्यापक आर्थिक अस्थिरता, बार-बार कृषि संबंधी व्यवधान और स्थानीय स्तर पर सत्ता संघर्ष

होते रहते थे। 1630 में शिवनेरी के पहाड़ी किले में जन्मे शिवाजी राजे भोसले का उदय इसी बिखरे हुए परिदृश्य के बीच हुआ। अपने पिता शाहजी भोसले की तरह क्षेत्रीय संप्रभुओं की सेवा करने के बजाय, शिवाजी ने एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य—*हिंदवी स्वराज्य* (देशी लोगों का स्व-शासन)— की परिकल्पना की।

अपने समय के हिसाब से शिवाजी की यह राजनीतिक परियोजना क्रांतिकारी थी। उन्होंने 1646 में तोरणा किले पर कब्जा करने से शुरुआत की और पश्चिमी घाट (सह्याद्री श्रेणी) में प्रमुख रणनीतिक गढ़ों पर कब्जा करके बीजापुर सल्तनत और मुगल साम्राज्य के आधिपत्य को व्यवस्थित रूप से चुनौती दी। तीन दशकों में, उन्होंने पुणे के आसपास की अपनी स्थानीय *जागीर* से अपने प्रभाव क्षेत्र को महाराष्ट्र, आधुनिक कर्नाटक के हिस्सों और तमिलनाडु तक फैले एक दुर्जेय संप्रभु राज्य में बदल दिया। 1674 में रायगढ़ किले में उनका राज्याभिषेक (*राज्याभिषेक*) मराठा संप्रभुता की एक औपचारिक घोषणा थी, जिसने एक अलग कानूनी, मौद्रिक और प्रशासनिक ढांचा पेश किया जिसने मुगल शाही सत्ता के सार्वभौमिक दावों को चुनौती दी।

1.2 इतिहासलेखन ढांचा और उद्देश्य

शिवाजी महाराज का विद्वतापूर्ण मूल्यांकन पिछले एक दशक में काफी विकसित हुआ है। शुरुआती ब्रिटिश इतिहासलेखन, जैसा कि जेम्स ग्रांट डफ की *हिस्ट्री ऑफ द महराजा* (1826) जैसी कृतियों में देखा जा सकता है, ने अक्सर शिवाजी को यूरोपीय दृष्टिकोण से वर्गीकृत किया, और उनके सैन्य अभियानों को केवल विद्रोही गतिविधियों के रूप में देखा। इसके विपरीत, उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी की शुरुआत के भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों, जिनमें सर जदुनाथ सरकार, जी. एस. सरदेसाई और वी. के. राजवाड़े शामिल हैं, ने प्राथमिक स्रोतों—विशेष रूप से मराठी *बख़्त* (इतिहास-वृत्त), फ़ारसी दरबारी रिकॉर्डों और पुर्तगाली/डच फैक्टरी पत्राचारों—का पुनरीक्षण किया ताकि शिवाजी को एक राज्य-निर्माता, सैन्य प्रतिभा और सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

आधुनिक इतिहासलेखन एक अंतरविषयक दृष्टिकोण अपनाता है, जो आर्थिक संरचनाओं, पारिस्थितिक-सांस्कृतिक परिदृश्यों, नौसैनिक युद्ध और प्रशासनिक तंत्रों का विश्लेषण करता है। इस लेख का उद्देश्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है:

1. सैन्य रणनीति, सार्वजनिक प्रशासन, नौसैनिक इंजीनियरिंग और सामाजिक नीति में शिवाजी महाराज के योगदान का एक कठोर, साक्ष्य-आधारित परीक्षण प्रदान करना।
2. यह परीक्षण करना कि हालिया तकनीकी प्रगति (जैसे GIS मैपिंग, सैटेलाइट रिमोट सेंसिंग, और स्ट्रक्चरल हेल्थ मॉनिटरिंग) मराठा किले के संरक्षण और ऐतिहासिक अनुसंधान में कैसे क्रांति ला रही है।
3. विरासत प्रबंधन और इतिहासलेखन में समकालीन चुनौतियों का समाधान करते हुए, सामंती विकेंद्रीकरण से केंद्रीकृत शासन की ओर प्रशासनिक प्रणालियों के संरचनात्मक परिवर्तन ("लक्षण सुधार") का गंभीर रूप से विश्लेषण करना।

2. रणनीतिक और सैन्य नवाचार

2.1 गनिमी कावा: छापामार युद्धकला

संख्यात्मक रूप से वरिष्ठ और बेहतर सुसज्जित मुगल और बीजापुरी सेनाओं के खिलाफ शिवाजी महाराज की सैन्य सफलता का मुख्य आधार छापामार युद्ध कला में महारत थी, जिसे मराठी में *गनिमी कावा* कहा जाता है। सह्याद्री पर्वतमाला के विषम इलाके में कार्य करते हुए, शिवाजी ने भूगोल को एक रक्षात्मक

और आक्रामक बल में बदल दिया। पारंपरिक खुले मैदान की लड़ाइयों में शामिल होने के बजाय, मराठा बल गतिशीलता, गोपनीयता, तेज घुड़सवार चालों और रणनीतिक धोखे पर निर्भर रहते थे।

गनिमी कावाके मुख्य सिद्धांतों में शामिल थे:

- **इलाके (Terrain) का दोहन:** घने जंगलों, संकीर्ण पहाड़ी दर्रों और गहरी घाटियों का उपयोग करके दुश्मन की आपूर्ति श्रृंखलाओं को संवेदनशील क्षेत्रों की ओर मोड़ना।
- **रणनीतिक हमले:** उच्च मूल्य वाले लक्ष्यों को बाधित करना, जैसे कि 1663 में पुणे में शाइस्ता खान के शिविर पर रात में किया गया प्रसिद्ध छापा या 1659 में प्रतापगढ़ में अफ़ज़ल खान पर अचानक घात लगाकर किया गया हमला।
- **गुप्तचर नेटवर्क:** बहिरजी नाइक के नेतृत्व में एक भूमिगत गुप्तचर नेटवर्क की स्थापना, जो दुश्मन की सैन्य गतिविधियों, आपूर्ति श्रृंखलाओं और भौगोलिक रास्तों के बारे में वास्तविक समय में खुफिया जानकारी प्रदान करता था।

जैसा कि ऐतिहासिक सैन्य गतिशीलता अध्ययनों में दिखाया गया है, मराठा हल्के घुड़सवार (बारगीर और शिलेदार) पहाड़ी इलाकों में एक दिन में 50 से 60 मील तक की दूरी तय कर सकते थे, जबकि भारी हथियारों से लैस मुगल सामान ढोने वाली गाड़ियाँ प्रति दिन 10 से 12 मील तक ही सीमित थीं। इस असमानता ने शिवाजी को दुश्मन के इलाके में गहराई तक वार करने की अनुमति दी—जैसे कि 1664 और 1670 में सूरत के समृद्ध बंदरगाह शहर पर हमला करना—और रक्षात्मक बलों के संगठित होने से पहले ही अपने सुरक्षित पहाड़ी गढ़ों में वापस आ जाना।

2.2 किला वास्तुकला और रक्षा नेटवर्क

किले शिवाजी के राज्य-निर्माण के मूलभूत स्तंभ थे। 1680 में उनकी मृत्यु के समय, मराठा साम्राज्य 300 से अधिक किलों को नियंत्रित करता था, जिन्हें *गिरी-दुर्ग* (पहाड़ी किले), *भुई-दुर्ग* (मैदानी किले), और *जल-दुर्ग* (समुद्री किले) में वर्गीकृत किया गया था। शिवाजी ने केवल मौजूदा किलों पर कब्जा नहीं किया; उन्होंने सटीक सैन्य इंजीनियरिंग सिद्धांतों के अनुसार उनका व्यवस्थित रूप से पुनर्निर्माण, विस्तार और पुनरुद्धार किया।

रायगढ़, राजगढ़ और प्रतापगढ़ जैसे किलों के डिजाइन में गहराई से रक्षात्मक व्यवस्था पर जोर दिया गया था:

- **दोहरे और तिहरे बुर्ज (गोमुखीसंरचना):** मुख्य प्रवेश द्वारों (*महा दरवाजा*) को "गाय के मुंह" के आकार में डिजाइन किया गया था, जिससे लंबी दूरी की तोपों की नजरों से द्वार छिप जाता था और हमलावर सेनाओं को तीरंदाजों और मस्कट की गोलियों के संपर्क में आने वाले संकीर्ण, समकोण वाले blind spots से गुजरने के लिए मजबूर होना पड़ता था।
- **जल प्रबंधन प्रणाली:** किलों को तराशे गए पत्थरों के कुंडों, चट्टानों के जलाशयों और वर्षा जल संचयन चैनलों के साथ बनाया गया था जो दो साल से अधिक समय तक चलने वाली घेराबंदी के दौरान भी सैनिकों को पीने का पानी प्रदान करने में सक्षम थे।
- **स्तरीकृत रक्षा परिधि:** कई संकेंद्रित दीवारें (*सोता*, *माची*, और *बाले किला*) यह सुनिश्चित करती थीं कि यदि बाहरी सुरक्षा गिर भी जाए, तो भी रक्षक उच्च, सुदृढ़ केंद्रों की ओर पीछे हट सकें।

3. प्रशासनिक सुधार और आर्थिक शासन

3.1 अष्ट प्रधानपरिषद और योग्यता-आधारित शासन

सत्ता के संकेंद्रण को रोकने और सामंती जागीरों में निहित अराजकता को समाप्त करने के लिए, शिवाजी ने आठ मंत्रियों की एक केंद्रीकृत परिषद की स्थापना की जिसे *अष्ट प्रधान मंडल* कहा जाता था। समकालीन मध्यकालीन राज्यों में आम वंशानुगत दरबारी पदों के विपरीत, *अष्ट प्रधान* में नियुक्तियाँ पूरी तरह से योग्यता-आधारित, गैर-वंशानुगत और सीधे राजा के प्रति जवाबदेह थीं।

मंत्री का पद	पदनाम / भूमिका	प्राथमिक जिम्मेदारियाँ
पेशवा (मुख्य प्रधान)	प्रधानमंत्री	साम्राज्य का समग्र प्रशासन, राज्य का निष्पादन और नागरिक नेतृत्व।
अमात्य (मजूमदार)	वित्त मंत्री	सार्वजनिक खातों का रखरखाव, राजस्व प्रबंधन और शाही लेखा परीक्षा।
सचिव (सुरनिस)	शाही सचिव	शाही फरमानों (<i>राजनीति</i>) का मसौदा तैयार करना, राज्य के पत्राचार की पुष्टि करना और किलों के खातों की जाँच करना।
मंत्री (वाकिया-नवीस)	गृह मंत्री / वृत्तांतकार	खुफिया जानकारी प्रबंधन, दैनिक शाही कार्यवाही का रिकॉर्ड और आंतरिक सुरक्षा।
सेनापति (सरनौबत)	सेनापति	सेना की भर्ती, सैन्य संगठन, युद्ध के मैदान की रणनीति और सैनिकों की तैयारी।
सुमंत (दबीर)	विदेश मंत्री	विदेशी संबंध, कूटनीतिक प्रोटोकॉल, खुफिया विश्लेषण और राज्य गठजोड़।
न्यायाधीश	मुख्य न्यायाधीश	नागरिक और आपराधिक न्याय का प्रशासन, कानूनी व्याख्या और अपीलें।
पंडितराव	धार्मिक प्रमुख	धार्मिक अनुदानों का संचालन, सार्वजनिक नैतिकता, धर्मार्थ संस्थान और विद्वानों का कल्याण।

न्यायाधीश और पंडितराव को छोड़कर, सभी प्रधानों को सैन्य कमान संभालने और युद्ध के समय सेना का नेतृत्व करने की आवश्यकता होती थी, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि नागरिक प्रशासन अग्रिम पंक्ति की सुरक्षा प्राथमिकताओं से गहराई से जुड़ा रहे।

3.2 राजस्व प्रणाली और कृषि कल्याण

शिवाजी के सुधारों से पहले, स्थानीय देशमुख मनमाने ढंग से भू-राजस्व एकत्र करते थे, अक्सर किसान (रयत) का शोषण करते थे और केंद्रीय खजाने से धन दबा लेते थे। शिवाजी ने भूमि माप की काठी प्रणाली (मानकीकृत मापने वाली छड़ें) के आधार पर प्रत्यक्ष राज्य राजस्व प्रशासन शुरू करके इस प्रणाली में सुधार किया।

मुख्य राजस्व नीतियों में शामिल थे:

- **प्रत्यक्ष मूल्यांकन (रयतवाड़ी सिद्धांत):** राज्य के राजस्व संग्रहकर्ता (कारकुन) बिचौलियों को दरकिनार करते हुए सीधे किसान के साथ कृषि भूमि का आकलन करते थे।
- **निश्चित कर दरें:** कृषि भूमि का सर्वेक्षण किया गया और उसे सूखी (जिरायत) और सिंचित (बागायत) श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। राजस्व दर वास्तविक कृषि उपज का 33% तय की गई थी, हालांकि जब राज्य सिंचाई सुविधाएं, बीज और बैल प्रदान करता था तो यह बढ़कर 40% हो जाती थी।
- **तकावी ऋण:** सूखे, अकाल या फसल खराब होने के समय, राज्य कृषि उपकरणों के लिए ब्याज मुक्त ऋण (तकावी) जारी करता था और कर संग्रह को पूरी तरह से स्थगित कर देता था।
- **वंशानुगत अनुदानों का उन्मूलन:** शिवाजी ने नए वंशानुगत भूमि fiefs (जागीरया मोकासा) को जारी करने पर प्रतिबंध लगा दिया। अधिकारियों और कमांडरों को सीधे शाही खजाने (कोश) से निश्चित नकद वेतन (वर्षसन) दिया जाता था।

स्थानीय किसानों पर अत्यधिक बोझ डाले बिना आंतरिक कृषि राजस्व को पूरा करने के लिए, शिवाजी ने विदेशी नियंत्रण वाले क्षेत्रों पर दो बाहरी कर लगाए: चौथ (मराठा हमलों से सुरक्षा के लिए दिया जाने वाला राजस्व का 25% कर) और सरदेशमुखी (भूमि के वंशानुगत मुख्य प्रमुख के रूप में शिवाजी के कानूनी दावे के आधार पर अतिरिक्त 10% शुल्क)।

4. नौसेना इंजीनियरिंग और समुद्री रणनीति

4.1 मराठा नौसेना (रत्नागिरी बेड़ा)

शिवाजी उन कुछ मध्यकालीन भारतीय शासकों में से एक थे जिन्होंने पश्चिमी समुद्र तट के साथ समुद्री शक्ति के रणनीतिक महत्व को पहचाना। यह मानते हुए कि यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ (पुर्तगाली, ब्रिटिश, डच) और जंजीरा के एबिसिनियन सिद्धी समुद्री व्यापार को नियंत्रित करते थे और तटीय सुरक्षा को खतरा पहुँचाते थे, शिवाजी ने 1657-1659 में मराठा नौसेना की स्थापना की।

कल्याण, भिवंडी और विजयदुर्ग में जहाज निर्माण गोदियों से शुरू होकर, मराठा बेड़ा विभिन्न क्षमताओं वाले 400 से अधिक जहाजों तक बढ़ गया। बेड़े को मायनाक भंडारी और दरियासारंग दौलत खान जैसे नौसैनिक कमांडरों के नेतृत्व में दो दस्तों में विभाजित किया गया था।

मराठा बेड़े के मुख्य जहाजों में शामिल थे:

- **गुराबः** ब्रॉडसाइड तोपों और दुश्मन के जहाजों को टक्कर मारने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रबलित धनुष वाले तीन-मस्तूल वाले भारी युद्धपोत।
- **गलबतः** उथली तटीय खाड़ियों और इनलेट्स में उच्च गतिशीलता के लिए डिज़ाइन किए गए दो-मस्तूल वाले हल्के फ्रिगेट।
- **पाल और मचवाः** सैनिक परिवहन, टोही और तटीय गश्त के लिए उपयोग किए जाने वाले छोटे सहायक शिल्प।

4.2 समुद्री किले और तटीय सुरक्षा

अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा करने और मुरुद-जंजीरा के अभेद्य द्वीप किले का मुकाबला करने के लिए, शिवाजी ने तटीय और द्वीप किलों की एक श्रृंखला का निर्माण किया, जिनमें विशेष रूप से सिंधुदुर्ग (मालवण), विजयदुर्ग, सुवर्णदुर्ग और पद्मदुर्ग शामिल हैं।

1664-1667 में सिंधुदुर्ग का निर्माण तटीय रक्षा इंजीनियरिंग में एक मील का पत्थर था। मालवण के एक चट्टानी द्वीप पर निर्मित, इस किले को एंकर नींव के लिए 4,000 मण से अधिक लोहे की आवश्यकता थी, जिसमें खारे पानी के क्षरण का विरोध करने के लिए पत्थर के जोड़ों में सीधे पिघला हुआ सीसा डाला गया था। किलेबंदी की दीवारों को द्वीप के प्राकृतिक चट्टानी किनारों का अनुसरण करने के लिए आकार दिया गया था, जिससे वे दूर के समुद्री रास्तों से लगभग अदृश्य हो जाती थीं और नौसैनिक हमलों के प्रति प्रतिरोधी थीं। इन किलों के माध्यम से, शिवाजी ने कोंकण तट रेखा पर मराठा नौसेना नियंत्रण स्थापित किया, व्यापारी जहाजों की रक्षा की और विदेशी नौसैनिक शक्तियों के प्रभाव को सीमित किया।

5. सामाजिक गतिशीलता, भाषा और धार्मिक नीति

5.1 समावेशिता और सामाजिक गतिशीलता

शिवाजी का राजनीतिक दर्शन (*स्वराज्य*) व्यापक सामाजिक समावेश पर बना था, जिसने दक्कन समाज के विभिन्न वर्गों को लामबंद करने के लिए कठोर जाति पदानुक्रम को तोड़ दिया। उनके सैन्य और नागरिक प्रशासन ने विभिन्न समुदायों से बड़े पैमाने पर लोगों को आकर्षित किया:

- **मावलाः** पश्चिमी घाट के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले किसान समुदायों ने उनकी पैदल सेना का मुख्य हिस्सा बनाया, जो अपनी सहनशक्ति और पहाड़ी युद्ध कौशल के लिए प्रसिद्ध थे।
- **कोली और भंडारीः** तटीय समुद्री समुदायों को मराठा नौसेना में भर्ती किया गया और जहाजों के प्रबंधन के लिए नियुक्त किया गया।
- **प्रभु, ब्राह्मण और मराठाः** सामाजिक पृष्ठभूमि के बजाय प्रतिभा के आधार पर प्रशासनिक, कूटनीतिक और राजस्व भूमिकाएँ निभाईं।

शिवाजी ने एक योग्यता प्रणाली की स्थापना की जहाँ सैनिकों को उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना युद्ध के मैदान में वीरता (*कड़ाकंगन*, शहीद सैनिकों के जीवित परिवारों के लिए पेंशन) के लिए सीधे पुरस्कृत किया जाता था।

5.2 धार्मिक सहिष्णुता और राज्य नैतिकता

हालाँकि शिवाजी ने एक हिंदू संप्रभु राज्य की स्थापना की, लेकिन उनकी धार्मिक नीति राज्य सहिष्णुता और गैर-हिंदू धर्मों के प्रति सम्मान से चिह्नित थी। गैर-मराठा इतिहासकारों के प्राथमिक रिकॉर्ड, जैसे कि मुगल वृत्तांतकार खाफी खान (जो अन्यथा शिवाजी के आलोचक थे), सैन्य अभियानों के दौरान उनके आचार संहिता को स्वीकार करते हैं:

"शिवाजी ने एक नियम बनाया कि जहाँ भी उनके अनुयायी लूटपाट करने जाएँगे, वे मस्जिदों, ईश्वर की पुस्तक [कुरआन], या किसी भी महिला को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। जब भी पवित्र कुरआन की कोई प्रति उनके हाथों में आती थी, तो वे उसका सम्मान करते थे और उसे अपने किसी मुसलमान अनुयायी को दे देते थे।" (खाफी खान, *मुखब-उल-लुबाब*)।

उनकी धार्मिक नीति के मुख्य पहलुओं में शामिल थे:

- **धार्मिक बंदोबस्तों का संरक्षण:** शिवाजी ने हिंदू मंदिरों और मठों के साथ-साथ सूफी दरगाहों, मस्जिदों और इस्लामिक विद्वानों को राज्य के वित्तीय अनुदान (*इनाम*) देना जारी रखा।
- **मुस्लिम अधिकारियों का समावेश:** प्रमुख मुस्लिम अधिकारियों ने मराठा राज्य में शीर्ष नेतृत्व के पद संभाले। सीधी इब्राहिम एक मुख्य तोपखाने अधिकारी थे, सिद्दी हिलाल ने घुड़सवार सेना के कमांडर के रूप में कार्य किया, और इब्राहिम खान उनकी नौसेना में एक वरिष्ठ अधिकारी थे।
- **पुनरावर्तन (*शुद्धि*):** ऐसे समाज में जो हिंदू धर्म में वापसी को सख्ती से प्रतिबंधित करता था, शिवाजी ने उन व्यक्तियों के पुनरावर्तन को मंजूरी दी जिनका जबरन धर्म परिवर्तन कराया गया था, जैसे कि नेताजी पालकर और बजाजी निम्बालकर।

5.3 भाषा मानकीकरण: *राज्यव्यवहार कोश*

सदियों के फ़ारसी शासन के तहत, प्रशासनिक पत्राचार में इस्तेमाल की जाने वाली मराठी भाषा फ़ारसी और अरबी शब्दावली से अत्यधिक संतृप्त हो गई थी। 1677 में, शिवाजी ने विद्वान रघुनाथ प्रसाद हनुमंते को एक व्यापक संस्कृत-मराठी प्रशासनिक शब्दकोश, *राज्यव्यवहार कोश*, असेंबल करने का काम सौंपा।

इस शब्दकोश ने सैकड़ों विदेशी प्रशासनिक शब्दों को संस्कृत समकक्षों से बदल दिया (उदाहरण के लिए, *वज़ीर* को *प्रधान*, *कारकुन* को *लेखक*, और *मुल्क* को *राष्ट्र* से बदलना)। इस भाषाई प्रयास ने देशी सांस्कृतिक पहचान को फिर से स्थापित करने में मदद की और मराठी भाषी क्षेत्रों में प्रशासनिक शब्दावली को मानकीकृत किया।

6. लक्षण सुधार: मराठा राज्य तंत्र का

6.1 सामंतवाद से केंद्रीकृत प्रशासन की ओर परिवर्तन

शिवाजी के तहत मराठा राज्य के विकास का विश्लेषण संरचनात्मक "लक्षण सुधार" के लेंस के माध्यम से किया जा सकता है—प्रणालीगत कमजोरियों को ठीक करने के लिए प्रशासनिक तंत्र का जानबूझकर किया गया परिवर्तन। शिवाजी से पहले, दक्कन की राजनीति विकेंद्रीकरण से परिभाषित होती थी, जहाँ सामंती प्रभु (*वतनदार*) राजस्व निकालते थे, निजी सेना रखते थे, और अक्सर प्रतिद्वंद्वी सल्तनतों के बीच वफादारी बदलते रहते थे।

शिवाजी ने इस सामंती संरचना को व्यवस्थित रूप से समाप्त किया और एक केंद्रीकृत राज्य का निर्माण किया:

सामंती वतनदारी प्रणाली (1650 से पहले)

इस संरचनात्मक विकास ने राज्य के लचीलेपन में काफी सुधार किया, जिससे यह राजस्व को कुशलतापूर्वक एकत्र करने, स्थायी सेनाओं को तेज़ी से तैनात करने और सैन्य संकटों के दौरान भी प्रशासनिक निरंतरता बनाए रखने में सक्षम हुआ।

6.2 किला संरक्षण मेट्रिक्स पर आधुनिक अनुभवजन्य डेटा

किलेबंदी पर शिवाजी के प्रशासनिक ध्यान की दीर्घकालिक भौतिक विरासत का मूल्यांकन करने के लिए, समकालीन संरक्षण सूचकांक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। प्रमुख मराठा पहाड़ी और समुद्री किलों में किए गए संरक्षण सर्वेक्षण संरचनात्मक अखंडता, पर्यावरणीय क्षरण और आगंतुकों के प्रभाव मेट्रिक्स का मूल्यांकन करते हैं।

जैसा कि तालिका 1 में दिखाया गया है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालय (महाराष्ट्र) द्वारा एकत्र किए गए अनुभवजन्य क्षेत्रीय आंकड़े प्रमुख मराठा किलों में वर्तमान संरचनात्मक स्थिति, मूल निर्माण सामग्री और संरक्षण सूचकांक स्कोर का सार प्रस्तुत करते हैं।

किले का नाम	किले का प्रकार	प्राथमिक निर्माण सामग्री	निर्माण / विस्तार का वर्ष	संरक्षण सूचकांक (स्कोर 1-100)*	प्राथमिक संवेदनशीलता कारक
रायगढ़	पहाड़ी किला (गिरी-दुर्ग)	दक्कन ट्रेप बेसाल्ट, मोर्टार	1656-1674	74 / 100	अत्यधिक पर्यटकों का आना, मानसूनी अपक्षय
प्रतापगढ़	पहाड़ी किला (गिरी-दुर्ग)	बेसाल्ट, चूना कंक्रीट	1656	68 / 100	वनस्पति विकास, भूस्खलन का जोखिम
सिंधुदुर्ग	समुद्री किला (जल-दुर्ग)	बेसाल्ट ब्लॉक, पिघला हुआ सीसा	1664-1667	59 / 100	समुद्री खारे पानी का क्षरण, लहरों का प्रभाव
विजयदुर्ग	समुद्री किला (जल-दुर्ग)	तिहरी बेसाल्ट दीवारें, चूना	1653 (विस्तारित)	65 / 100	जलमग्न दीवार का क्षरण, ज्वारीय प्रभाव

किले का नाम	किले का प्रकार	प्राथमिक निर्माण सामग्री	निर्माण / विस्तार का वर्ष	संरक्षण सूचकांक (स्कोर 1-100)*	प्राथमिक संवेदनशीलता कारक
राजगढ़	पहाड़ी किला (गिरी-दुर्ग)	प्राकृतिक चट्टान, बेसाल्ट	1647-1670	81 / 100	तीव्र ढलान का अपक्षय, पगडंडी का क्षरण
शिवनेरी	पहाड़ी किला (गिरी-दुर्ग)	तराशी गई चट्टान, पत्थर	1630 का दशक (अधिग्रहीत)	85 / 100	तलहटी क्षेत्रों के आसपास शहरी विकास

*दीवारों की मजबूती, जल कुंडों की प्रयोज्यता और चिनाई की स्थिरता को मापने वाले ASI संयुक्त संरचनात्मक ऑडिट पर आधारित संरक्षण सूचकांक।

7. मराठा ऐतिहासिक अनुसंधान में हालिया तकनीकी प्रगति

7.1 रिमोट सेंसिंग, GIS, और LiDAR का किलों के नेटवर्क पर अनुप्रयोग

हाल के वर्षों में, शिवाजी महाराज के राज्य-निर्माण पर ऐतिहासिक शोध शुद्ध पाठ्य विश्लेषण से आगे बढ़कर आधुनिक स्थानिक और डिजिटल तकनीकों को एकीकृत कर चुका है। पश्चिमी घाट के घने जंगलों और विषम स्थलाकृति ने ऐतिहासिक रूप से मराठा किलों का सटीक मानचित्रण कठिन बना दिया था। आज, भौगोलिक प्रौद्योगिकियाँ इन कमियों को पूरा कर रही हैं:

- **भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS):** GIS स्थानिक विश्लेषण ने शोधकर्ताओं को मराठा साम्राज्य के संपूर्ण रक्षात्मक नेटवर्क का मानचित्रण करने की अनुमति दी है। इलाके के नक्शों के साथ ऐतिहासिक रास्तों (घाट रास्तों) को ओवरले करके, GIS मॉडलिंग ने खुलासा किया है कि मराठा किलों को कौकण तट को देश के पठार से जोड़ने वाले हर प्रमुख व्यापार मार्ग को कवर करते हुए निरंतर दृश्य संकेत पथ बनाए रखने के लिए स्थित किया गया था।
- **LiDAR (लाइट डिटेक्टिंग एंड रेंजिंग):** प्रतापगढ़ और वासोता जैसे घने जंगलों वाले किलों में हवाई LiDAR स्कैनिंग तैनात की गई है। LiDAR घने जंगलों को भेदता है, जिससे पहले से अनदेखी संरचनात्मक नींव, भूमिगत जल चैनल, भागने की सुरंगें और छिपे हुए रक्षात्मक कार्य (माची) सामने आते हैं।
- **उपग्रह रिमोट सेंसिंग:** उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली बहु-स्पेक्ट्रल उपग्रह इमेजरी शोधकर्ताओं को मिट्टी की नमी की विसंगतियों को ट्रैक करने में मदद करती है, जिससे विनाशकारी खुदाई के बिना दबे हुए पुरातात्विक संरचनाओं, जल संचयन चैनलों और प्राचीन सड़क नेटवर्क की पहचान की जा सकती है।

चित्र 2 दिखाता है कि मराठा सैन्य वास्तुकला का दस्तावेजीकरण और संरक्षण करने के लिए इन आधुनिक स्थानिक तकनीकों को ऐतिहासिक और पुरातात्विक कार्यप्रवाहों में कैसे एकीकृत किया जाता है।



Lohagad Fort



Raigad Fort

मराठा किलों का भौगोलिक परिदृश्य. Source: Drishti IAS

7.2 डिजिटल ह्यूमैनिटीज, अभिलेखागार का डिजिटलीकरण और 3D संरक्षण

प्राथमिक दस्तावेजी साक्ष्यों और भौतिक किला संरचनाओं के संरक्षण को भी डिजिटल ह्यूमैनिटीज में हुई प्रगति से लाभ हुआ है:

- **मोड़ीलिपि दस्तावेजों का डिजिटल संग्रह:** cursive मोड़ीलिपि में लिखे गए लाखों ऐतिहासिक मराठा रिकॉर्ड (रुमाल)—जो पुणे अभिलेखागार (पेशवा दफ्तर) और तंजावुर की तंजौर सरस्वती महल लाइब्रेरी में संग्रहीत हैं—का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। ऐतिहासिक लिपियों पर प्रशिक्षित ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR) सॉफ्टवेयर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अनुवाद मॉडल के साथ मिलकर, इन प्राथमिक ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुवाद और सार्वजनिक अनुक्रमण में तेजी ला रहा है।
- **3D फोटोग्रामेट्री और डिजिटल जुड़वां (Digital Twins):** जलवायु परिवर्तन और अत्यधिक पर्यटन के कारण होने वाले भौतिक क्षरण को कम करने के लिए, संरक्षण दल रायगढ़ और सिंधुदुर्ग जैसे किलों के उच्च-परिभाषा 3D "डिजिटल जुड़वां" बना रहे हैं। टेरेस्ट्रियल लेजर स्कैनर और ड्रोन फोटोग्रामेट्री का उपयोग करते हुए, ये 3D मॉडल मिलीमीटर की सटीकता के साथ संरचनात्मक ज्यामिति को कैप्चर करते हैं। ये डिजिटल जुड़वां मानसूनी क्षति के बाद संरचनात्मक बहाली के लिए आधारभूत संदर्भ के रूप में कार्य करते हैं और वैश्विक शोधकर्ताओं के लिए आभासी वास्तविकता पहुंच प्रदान करते हैं।

8. इतिहासलेखन और विरासत प्रबंधन में उभरती चुनौतियाँ

8.1 भौतिक क्षरण और संरक्षण की बाधाएँ

अपने ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, मराठा साम्राज्य की भौतिक संरचनाओं को गंभीर संरक्षण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **मानसूनी अपक्षय:** पश्चिमी घाटों में मानसून के मौसम में अत्यधिक वर्षा होती है (अक्सर सालाना 3,000 मिमी से अधिक)। बेसाल्ट चिनाई के जोड़ों में पानी का रिसाव जमने-पिघलने की दरारें, पत्थरों का विस्थापन और दीवारों के गिरने का कारण बनता है।
- **आक्रामक वनस्पति:** गहरे जड़ों वाले पेड़ (जैसे *फिकस प्रजाति*) किलों की दीवारों पर मोटार के जोड़ों में प्रवेश करते हैं, जिससे यदि अनुपचारित छोड़ दिया जाए तो गंभीर संरचनात्मक टूट-फूट होती है।
- **अनियंत्रित पर्यटन:** रायगढ़ और सिंहगढ़ जैसी प्रमुख साइटों पर सप्ताहांत में पर्यटकों की भारी भीड़ होती है, जिससे मृदा अपरदन, कूड़ा-कचरा फैलना और ऐतिहासिक पत्थर की चिनाई पर तोड़फोड़ होती है।

- **संसाधन और समन्वय संबंधी बाधाएँ:** महाराष्ट्र भर में 300 से अधिक किलों का प्रबंधन करने के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय निवेश और अंतर-एजेंसी समन्वय की आवश्यकता होती है। जिम्मेदारियाँ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (राष्ट्रीय स्तर), राज्य पुरातत्व विभाग, स्थानीय नगर निकायों और वन विभागों के बीच बंटी हुई हैं, जिससे तत्काल संरक्षण कार्य में प्रशासनिक देरी होती है।

8.2 इतिहासलेखन संबंधी चुनौतियाँ और राजनीतिक उपकरणिकरण

भौतिक संरक्षण से परे, शिवाजी महाराज पर विद्वतापूर्ण शोध जटिल इतिहासलेखन संबंधी मुद्दों को नेविगेट करता है:

- **इतिहास का राजनीतिकरण:** शिवाजी की ऐतिहासिक विरासत को अक्सर विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों द्वारा अपने हिसाब से ढाला जाता है, जो अक्सर सत्रहवीं शताब्दी के जटिल इतिहास को संकीर्ण, धुवीकृत आख्यानो में बदल देता है। यह राजनीतिक उपकरणिकरण उनके परिष्कृत सामाजिक-आर्थिक सुधारों, नौसैनिक रणनीतियों और धर्मनिरपेक्ष प्रशासनिक नीतियों को धुंधला करने का जोखिम उठाता है।
- **प्राथमिक स्रोतों की समीक्षा:** इतिहासकारों को प्राथमिक स्रोतों के भीतर संभावित पूर्वाग्रहों को लगातार नेविगेट करना पड़ता है। मराठी *बख़र* (जैसे *सभासद बख़र* या *चिटनिस बख़र*) अक्सर घटनाओं के घटित होने के दशकों बाद लिखे गए थे और ऐतिहासिक आंकड़ों को रोमांटिक बनाने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसके विपरीत, समकालीन मुगल दरबारी इतिहास (*मुंतख़ब-उल-लुबाब*) और यूरोपीय फैक्टरी रिकॉर्ड (ब्रिटिश, डच, पुर्तगाली) अपने स्वयं के भू-राजनीतिक पूर्वाग्रहों को वहन करते हैं। एक निष्पक्ष ऐतिहासिक संतुलन प्राप्त करने के लिए स्रोत सामग्री की तीनों श्रेणियों में कठोर क्रॉस-सत्यापन की आवश्यकता होती है।
- **अनुवाद और पहुँच सीमाएँ:** मोड़ीलिपि, फ़ारसी, पुर्तगाली और डच में लिखे गए प्राथमिक दस्तावेजों का एक विशाल संग्रह आधुनिक भाषाओं में अनूदित नहीं है। पुरालेखशास्त्र और मोड़ीलिपि में प्रशिक्षित विद्वानों का घटता दायरा आगामी ऐतिहासिक शोध के लिए एक बड़ी बाधा प्रस्तुत करता है।

9. निष्कर्ष

छत्रपति शिवाजी महाराज भारतीय इतिहास में न केवल एक कुशल सैन्य कमांडर के रूप में, बल्कि एक दूरदर्शी राज्य-निर्माता के रूप में भी जाने जाते हैं, जिन्होंने सत्रहवीं शताब्दी के दक्कन के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को नया आकार दिया। उनके *स्वराज्य* की शुरुआत *नेगनिमी कावा* (छापामार युद्धकला) जैसी सैन्य रणनीतियों और पहाड़ी व तटीय किलों के एक नेटवर्क के माध्यम से स्थापित शाही शक्तियों को चुनौती दी। सैन्य रणनीति से परे, उनके प्रशासनिक सुधारों—जिसमें *अष्ट प्रधान* परिषद, सामंती जागीरों का उन्मूलन, एक मानकीकृत प्रत्यक्ष कर प्रणाली और एक आधुनिक नौसेना का निर्माण शामिल है—ने एक केंद्रीकृत, योग्यता-आधारित और लचीले राज्य तंत्र की संरचनात्मक नींव रखी।

इसके अलावा, शिवाजी की सामाजिक-सांस्कृतिक नीतियों ने एक समावेशी राजनीतिक मॉडल स्थापित किया। सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को रोजगार देकर, गैर-हिंदू आबादी के प्रति धार्मिक सहिष्णुता बनाए रखकर, और देशी प्रशासनिक भाषा को मानकीकृत करने के लिए *राज्यव्यवहार कोश* का निर्माण कराकर, उन्होंने एक एकीकृत राजनीतिक पहचान का निर्माण किया जो उनके जीवनकाल के बाद भी कायम रही। उनके राज्य-निर्माण ने अठारहवीं शताब्दी के दौरान पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में मराठा साम्राज्य के विस्तार के लिए एक टिकाऊ खाका के रूप में कार्य किया।

समकालीन युग में, शिवाजी के शासनकाल में ऐतिहासिक शोध एक बड़े बदलाव से गुजर रहा है। प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति—जैसे कि GIS स्थानिक मानचित्रण, हवाई LiDAR स्कैनिंग, फोटोग्रामेट्री, और मोडर्न लिपि पांडुलिपियों का डिजिटल संग्रह—इतिहासकारों और पुरातत्वविदों को मराठा रक्षात्मक नेटवर्क का विश्लेषण करने, छिपी हुई संरचनात्मक वास्तुकला को उजागर करने और प्राथमिक स्रोत दस्तावेजों को संरक्षित करने के लिए शक्तिशाली उपकरण दे रही है।

हालाँकि, बड़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। मराठा किलों के नेटवर्क को मानसूनी अपक्षय, आक्रामक वनस्पति और अत्यधिक पर्यटन से भौतिक क्षरण का सामना करना पड़ता है। इन मुद्दों को हल करने के लिए समन्वित, आधुनिक संरक्षण रणनीतियाँ, सतत पर्यटन ढाँचे और निरंतर वित्तपोषण की आवश्यकता है। साथ ही, अकादमिक इतिहासकारों को शिवाजी की ऐतिहासिक विरासत को राजनीतिक सरलीकरण से बचाने के लिए काम करना चाहिए, जिससे सार्वजनिक स्मृति कठोर, साक्ष्य-आधारित अनुसंधान पर आधारित रहे। आधुनिक तकनीकों को निष्पक्ष ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ जोड़कर, भविष्य का शोध शिवाजी महाराज के राज्य-निर्माण की स्थायी विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना जारी रख सकता है।

संदर्भ

- [1]. Bhandarkar, D. R. (1940). *Inscriptions of Shivaji's era and administrative orders*. Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, 21(1/2), 71–89.
- [2]. Chitnis, K. N. (1994). *Socio-economic history of medieval India*. Atlantic Publishers & Distributors.
- [3]. Duff, J. G. (1826). *A history of the Mahrattas* (Vols. 1–3). Longman, Rees, Orme, Brown, and Green.
- [4]. Gordon, S. (1993). *The Marathas 1600–1818* (The New Cambridge History of India, Vol. II.4). Cambridge University Press. <https://doi.org/10.1017/CHOL9780521268837>
- [5]. Khafi Khan, M. (1869). *Muntakhab-ul-Lubab* (H. M. Elliot & J. Dowson, Eds. & Trans., *The History of India, as Told by Its Own Historians*, Vol. 7). Trübner and Co.
- [6]. Kulkarni, A. R. (1969). *Maharashtra in the age of Shivaji*. Deshmukh and Company.
- [7]. Kulkarni, A. R. (1996). *Medieval Maratha country*. Books & Books.
- [8]. Pagadi, S. M. (1983). *Chhatrapati Shivaji*. National Book Trust, India.
- [9]. Rajwade, V. K. (1898–1918). *Marathyanchnya Itihasachi Sadhane* [Sources for the History of the Marathas] (Vols. 1–22). Bharat ItihasSamshodhak Mandala.
- [10]. Ranade, M. G. (1900). *Rise of the Maratha power*. Phatak & Sons.
- [11]. Sabhasad, K. A. (1920). *Siva Chhatrapati: Being the translation of SabhasadBakhar with notes* (S. N. Sen, Trans.). University of Calcutta.
- [12]. Sarkar, J. (1920). *Shivaji and his times* (2nd ed.). M. C. Sarkar & Sons.
- [13]. Sen, S. N. (1928). *Military system of the Marathas*. Book Company.
- [14]. Sen, S. N. (1958). *Administrative system of the Marathas* (3rd ed.). University of Calcutta.